International Journal of Multidisciplinary Education and Research
www.educationjournal.in
ISSN: 2455-4588
Received: 02-09-2022, Accepted: 18-09-2022, Published: 04-10-2022
Volume 7, Issue 4, 2022, Page No. 4-6

विभिन्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता का अध्ययन

Devki Nandan Sharma
Assistant Professor, Faculty of Education, GLA University, Mathura, Uttar Pradesh, India

सारांश
इस शोध पत्र में उच्च, मध्य एवं निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता का अध्ययन का अध्ययन करने हेतु शून्य परिकल्पना "विभिन्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है" का निर्माण किया । प्रदत्त संकलन हेतु डॉ0 मोहन चन्द्र जोशी द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया और पाया गया विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक यौग्यता में अन्तर होता है। उच्च एवं मध्य आय वर्ग की तुलना में निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक –योग्यता का स्तर निम्न होता है।

मूल शब्दः उच्च, मध्य एवं निम्न आय वर्ग, बालक, बालिका, बौद्धिक–योग्यता

प्रस्तावना
आजकल बच्चों को उनकी आर्थिक पृष्ठभूमि के अनुसार आँका जाता है तथा उसी अनुसार बर्ताव किया जाता है। हर स्थान पर चाहे घर हो स्कूल हो या पड़ोस या खेल का मैदान सभी में उन्हें अपमानित और तिरस्कृत होना पड़ता हैं। स्कूल में साफ–सुथरे कपड़े पहनकर जाना, नियमित रूप से उपस्थिति, शिक्षण सामग्री जैसे – कॉपी, किताब स्टेशनरी आदि की उपलब्धता परिवार की आर्थिक स्थिति पर निर्भर है जिसके लिए निर्दोष होते हुए भी पग–पग पर बच्चे को प्रताड़ित किया जाता है। अपनी पद प्रतिष्ठा यश और मान के अभिमान में चूर रहने वाले अभिभावक जनों द्वारा अपने बच्चे के गरीब मित्रों का अपमान, उपेक्षा और तिरस्कार होता है अथवा वे अपने बच्चे को निम्न जीवन स्तर के निर्धन बच्चों के साथ मित्रता रखने, खेलने–कूदने या बात तक करने से सख्त मनाही कर देते हैं। समाज के उच्चवर्गीय व्यक्तियों द्वारा अपने बच्चों को निर्धन बच्चों से मिलने–जुलने, साथ खेलने की उदार अनुमति न देने से गरीब बच्चों का सामाजिक तिरस्कार होता है जिससे उनमें सामाजिक उपेक्षा और अरूचि की भावना उत्पन्न होने लगती है और असामाजिक प्रवृत्तियाँ तेजी से पनपने लगती हैं।विभिन्न वर्ग से तात्पर्य उद्योगों से कार्य कर रहे व्यक्तियों की विभिन्नता से है। इसमें पद, प्रस्थिति, सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर विभिन्नता है। इनके विचारों, रहन–सहन खानपान एवं जीवन शैली में विभिन्नता होती है। चूंकि हर व्यक्ति अपने गुण, विचार, योग्यता में भिन्न होता है। इसी कारण ये कारक विभिन्न वर्ग को जन्म देते हैं। यहाँ पर विभिन्न वर्ग से तात्पर्य उद्योगों में कार्यरत व्यक्तियों को उसकी आय के आधार पर तीन भिन्न–भिन्न वर्गो उच्च, मध्य एवं निम्न में वर्गीकृत किया गया है। इन्हीं तीनों वर्गो के बालक एवं बालिकाओं पर यह अध्ययन केन्द्रित है।

1. उच्च आय वर्ग
2. मध्य आय वर्ग
3. निम्न आय वर्ग

उच्च आय वर्ग
उच्च आय वर्ग में ये सभी व्यक्ति आ जाते हैं जो किसी न किसी रूप से उद्योगों में विभिन्न पदों पर नियुक्त है किन्तु उनकी आर्थिक स्थिति, सामाजिक प्रस्थिति एवं पद अधिक उच्च है। उच्च आय वर्ग के व्यक्तियों का रहन–सहन, जीवन शैली एवं सामाजिक जीवन उच्च होता है। उच्च आय वर्ग के शैक्षिक स्थिति बेहतर होती है, स्वयं पढ़े लिखे होने के कारण ये अपने बच्चों की शिक्षा पर अधिक ध्यान देते हैं।

मध्यम आय वर्ग
उद्योगों में कार्यरत वे सभी व्यक्ति मध्यम आय वर्ग में आते हैं जिनकी आय उच्च वर्ग से कम तथा निम्न वर्ग से अधिक होती है। उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति मध्यम श्रेणी की होती है, वे अपनी पद प्रस्थिति के अनुसार समाज में अच्छे ढंग से अपना जीवन निर्वाह करते हैं तथा उनकी शैक्षिक स्थिति भी संतोष जनक होती है। मध्यम वर्ग के अधिकांश व्यक्ति पढ़े–लिखे एवं सुसंस्कृत होते हैं तथा जीवन के प्रति इनका दृष्टिकोण रचनात्मक होता है। मध्यम आय वर्ग के व्यक्ति का जीवन स्तर उच्च आय वर्ग से थोड़ा भिन्न होता है।
मध्यम आय वर्ग के बच्चे आत्मविश्वास से भर होते हैं इनमें कार्य को सम्पादित करने की भरपूर क्षमता होती है। किसी भी विषय को भली प्रकार पढ़ने व समझने में कुशल होते हैं। घरेलू वातावरण, माता–पिता की शिक्षा का स्तर, पिता का व्यवसाय तथा सामाजिक प्रतिष्ठा मध्यम आय वर्ग के बच्चों की शिक्षा को प्रभावित करती ळें

निम्न आय वर्ग
निम्न आय वर्ग का अभिप्राय उद्योगों में कार्यरत वे व्यक्ति जो श्रमिक या मजदूर या कारीगर के पद पर कार्यरत है, इनका कार्य होता है, धातुओं को गलाना, ढ़लाई, छिलाई, रंगाई, पेन्टिग, नक्काशी करना, सामानों की पैकिंग, अच्छेमाल की छंटाई आदि।
भारतीय परिवेश में श्रमिक अथवा मज़दूर वर्ग का जीवन स्तर सदैव से निम्न रहा है, जिसका कारण इनकी आर्थिक कमजोरी है। ये आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण समाज की उपेक्षा के शिकार होते हैं आर्थिक कमजोरी के कारण इनका घरेलू वातावरण प्रदूषित रहता है। अशिक्षा, कुपोषण एवं अभावों के कारण ये समाज की मुख्य धारा से जुड़े होते हुए भी अलग–अलग पड़े रहते हैं। ये अभावों के बीच संघर्ष करते हुए अपनी जीवन यापन करते हैं जिसके परिणाम स्वरूप इनका आत्मविश्वास कमज़ोर होता है।
निम्न आय वर्ग के बच्चों का घरेलू कलहपूर्ण, शोरयुक्त एवं अव्यवस्थित होने के कारण इनमें कई बुरी आदतें भी होती है जिसके कारण ये पढ़ने–लिखने से जी चुराते है तथा इनका विकास अवरूद्ध हो जाता है। इसके साथ–साथ निम्न आय वर्ग के सदस्य अपने बच्चों की शिक्षा पर व्यय भी नहीं करना चाहते,

फलस्वरूप ऐसे परिवार के बच्चों की शैक्षिक निष्पत्ति बुरी तरह प्रभावित होती है।

बौद्धिक–योग्यता

बोद्धिक योग्यता से तात्पर्य – सामान्य–मानसिक योग्यता से हैं जैसे प्रभावपूर्ण एवं समृद्ध भाषा ग्रहण करने की योग्यता, कौशल और ज्ञान, संख्यात्मक योग्यता, दिए गए युग्मों में से सदस्यों की पहचान करना अर्थात् सादृश्यता, सही उत्तर देना, उदाहरण का तर्क एवं निर्णय के आधार पर सामान्यीकरण करना है।

समस्या कथन

विभिन्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता का अध्ययन ।

शोध के उद्देश्य

- विभिन्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

- विभिन्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध विधि

इस अध्ययन में शोध विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श के रूप में विभिन्न वर्ग के लोगों के वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के 500 बालक–बालिकाओं का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु डॉ0 मोहन चन्द्र जोशी द्वारा निर्मित सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या

बौद्धिक–योग्यता पर विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं के माध्य, मानक–विचलन एवं 'टी' मूल्य का विस्तृत विवरण सारणी संख्या 1 में प्रदर्शित है।

तालिका 1: विभिन्न वर्ग के बालक बालिकाओं के बौद्धिक–योग्यता स्तर के प्राप्तांको के मध्य सार्थकता के अन्तर की जॉच हेतु प्रयुक्त 'टी' मूल्य

	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	'टी' मूल्य	P
बालक	उच्च आय वर्ग	50	54.30	13.00	0.50	N.
	मध्य आय वर्ग	128	53.21	13.70		
	उच्च आय वर्ग	50	54.30	13.00	0.70	N. S
	निम्न आय वर्ग	72	52.76	10.25		
	मध्य आय वर्ग	128	53.21	13.70	0.26	N. S
	निम्न आय वर्ग	72	52.76	10.25		
बालिका	उच्च आय वर्ग	50	52.00	5.26	3.65	.01 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग	137	56.60	11.86		
	उच्च आय वर्ग	50	52.00	5.26	0.27	N. S
	निम्न आय वर्ग	63	51.52	13.05		
	मध्य आय वर्ग	137	56.00	11.86	2.63	.01 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग	63	51.52	13.05		
बालक एवं बालिका	उच्च आय वर्ग बालक	50	54.30	13.00	1.16	N. S
	उच्च आय वर्ग बालिका	50	52.00	5.26		
	मध्य आय वर्ग बालक	128	53.21	13.70	2.16	.05 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग बालिका	137	56.60	11.86		
	निम्न आय वर्ग बालक	72	52.78	10.25	0.61	N. S
	निम्न आय वर्ग बालिका	63	51.52	13.05		

सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालकों की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की बौद्धिक योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। मध्य एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की बौद्धिक–योग्यता में कोई अन्तर नहीं पाया गया है।

उच्च एवं मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। यह अन्तर .01 पर सार्थक है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इसी प्रकार मध्य एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में भी सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। यह अन्तर .01 स्तर पर है।

उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ है। मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में अन्तर हैं यह अन्तर 0.05 स्तर पर सार्थक हैं। इस प्रकार पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई। शुन्य परिकल्पना के अस्वीकृत होने पर वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जा सकती है कि मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता में सार्थक अन्तर हैं।

उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालकों की बौद्धिक–योग्यता में कोई सार्थक नहीं प्राप्त होने का मुख्य कारण है कि दोनों आय वर्ग लगभग एक समान हैं। दोनों आय वर्ग की घरेलू वातावरण, पारिवारिक पृष्ठ भूमि समान होने के कारण ही इनकी बौद्धिक–योग्यता समान हैं। निम्न आय वर्ग के बालकों की बौद्धिक–योग्यता का स्तर उच्च एवं मध्य आय वर्ग के समान पाया गया है। बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की बौद्धिक–योग्यता स्तर का मध्यमान प्राप्तांक कम हैं इसका सम्भावित मुख्य कारण यह हो सकता है कि उनकी गणितीय योग्यता में कमी का पाया जाना परम्परा से यह जाना जाता है कि छात्राओं के लिए अंक व अंक बोध एक हौवा की तरह है जो कि इनको गणितीय ज्ञान प्राप्त करने से रोकता है इसका अर्थ है कि बालिकाओं का समूह बालकों की अपेक्षा गणितीय योग्यता में कमजोर होता है। ''बर्गर'' ने भी सारांश में कहा है कि बालकों की अपेक्षा बालिकाओं की गणितीय क्रिया कलापों से दूर हो जाती हैं। गणितीय योग्यता में

न्यून होने के कारण ही बालकों की अपेक्षा बालिकाएँ बौद्धिक–योग्यता स्तर में न्यून पायी जाती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त परिणामों से यह निष्कर्ष निकलता है कि विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक यौग्यता में अन्तर होता है। उच्च एवं मध्य आय वर्ग की तुलना में निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की बौद्धिक –योग्यता का स्तर निम्न होता है। अध्ययन से प्राप्त परिणामों का समर्थन इन सभी के शोध साक्ष्यों द्वारा होता है– बोसियो (1965), वोगेल एट एल (1967), व्हाइट मैन, ब्राउन एवं डयूस्क (1967), पाण्डेय (1970), सल्पाटेक (1971), सिंह (1976), त्रिपाठी एवं मिश्रा (1976), रथ एट एल (1979), कैसर जहाँ (1981), पाण्डेय (1984), उपाध्याय (1985), रेखा रानी अग्रवाल (1987)।

बालिकाओं की तुलना में बालकों की बौद्धिक योग्यता के प्राप्तांक उच्च थे। इस प्राप्त परिणाम का समर्थन इनके शोध साक्ष्यों द्वारा होता है – अग्रवाल, श्वेता, अग्रवाल, सुमन (1999), जयप्रकाश (1972)।

निम्न आर्थिक स्तर वाले बालकों की बौद्धिक योग्यता का स्तर भी निम्न होता हैं। प्राप्त परिणाम का समर्थन इनके शोध साक्ष्यों द्वारा होता है – शर्मा के. एल. (1979), चौहान, एस. एस. (1984)।

इस क्रम में उच्च, मध्य एवं निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं को उनकी बुद्धि–फलांक के अनुसार अति श्रेष्ठ, तीव्र सामान्य, सामान्य, मन्द सामान्य, सीमावर्ती एवं दोषपूर्ण बुद्धि वाले के रूप में वर्गीकृत किया गया हैं। प्रत्ये बालक–बालिकाओं की बुद्धि–फलांक की गणना वैश्लर विधि द्वारा की गई है (जोशी, 1981, पृष्ठ 22) तथा निम्नांकित सूत्र का प्रयोग किया गया –

$$\text{बुद्धि–फलांक} = \frac{\text{व्यक्ति का प्राप्तांक}}{\text{उस व्यक्ति की आयु का मध्यमान}} \times 100$$

प्रत्येक श्रेणी के बालकों की संख्या बुद्धि–फलांक के अनुसार सारणी संख्या 4 (4) 2 में प्रदर्शित है।

तालिका 2: बुद्धि–फलांक के अनुसार विभिन्न आय वर्ग के बालकों की संख्या का वितरण

वर्गीकरण	प्राथमिक बुद्धि फलांक	उच्च आय वर्ग	मध्य आय वर्ग	निम्न आय वर्ग
अतिश्रेष्ठ	161 व ऊपर	02	09	02
श्रेष्ठ	141 से 160 तक	03	10	03
तीव्र सामान्य	121 से 140 तक	11	40	17
सामान्य मन्द	81 से 120 तक	26	57	42
सामान्य	61 से 80 तक	07	08	07
सीमावर्ती	41 से 60 तक	01	04	01
दोषपूर्ण	40 और नीचे	00	00	00
	संख्या	50	128	72

सारणी संख्या 2 स्पष्ट रूप से यह इंगित करती है कि उच्च आय वर्ग की 16, मध्य आय वर्ग की 59 एवं निम्न आय वर्ग की 22 बालकों की बुद्धि–फलांक औसत (सामान्य) से ऊपर हैं। इसी प्रकार उच्च आय वर्ग की 8, मध्य आय वर्ग की 12 एवं निम्न आय वर्ग की 08 बालकों का बुद्धि–फलांक औसत (सामान्य) से नीचे हैं तथा औसत (सामान्य) बुद्धि–फलांक रखने वाली उच्च आय वर्ग में 26, मध्य आय वर्ग में 57 तथा निम्न आय वर्ग में 42 बालक हैं।

क्रमशः प्रत्येक श्रेणी की बालिकाओं की संख्या बुद्धि–फलांक सारणी संख्या 4 3 में प्रदर्शित है।

तालिका 3: बुद्धि–फलांक के अनुसार विभिन्न आय वर्ग के बालिकाओं की संख्या का वितरण

वर्गीकरण	प्राथमिक बुद्धि फलांक	उच्च आय वर्ग	मध्य आय वर्ग	निम्न आय वर्ग
अतिश्रेष्ठ	161 व ऊपर	00	03	00
श्रेष्ठ	141 से 160 तक	11	31	10
तीव्र सामान्य	121 से 140 तक	09	31	14
सामान्य मन्द	81 से 120 तक	24	62	28
सामान्य	61 से 80 तक	02	07	08
सीमावर्ती	41 से 60 तक	04	03	03
दोषपूर्ण	40 और नीचे	00	00	00
	संख्या	50	137	63

सारणी संख्या 3 स्पष्ट रूप से यह इंगित करती है कि उच्च आय वर्ग के 20, मध्य आय वर्ग के 65 एवं निम्न आय वर्ग की 24 बालिकाओं का बुद्धि–फलांक औसत (सामान्य) से ऊपर हैं। इसी प्रकार उच्च आय वर्ग के 06, मध्य आय वर्ग के 10 एवं निम्न आय वर्ग के 11 बालिकाओं का बुद्धि–फलांक औसत से नीचे तथा औसत (सामान्य) बुद्धि–फलांक रखने वाले उच्च आय वर्ग के 24, मध्य आय वर्ग में 62 तथा निम्न आय वर्ग में 28 बालिका हैं।

यह तीव्र सामान्य बुद्धि रखने वाले 22 बालक एवं 24 बालिकाएं जो कि निम्न आय वर्ग से सम्बद्ध है, दास (1973, पृष्ठ 13) की परिकल्पना के तर्क की पुष्टि करते हैं। दास की परिकल्पना का तर्किक पक्ष है कि बालक बुद्धि के एक निश्चित स्तर के साथ जन्म लेता है विपन्नता के अनुभवों से उसकी का हनन नहीं होता है।

इस प्रकार यह निष्कर्ष निकलता है कि निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाएं शिक्षा के क्षेत्र में कमजोर बुद्धि के साथ प्रवेश करते हैं। यही बौद्धिक कमी उनके शैक्षिक उद्यम एवं जीवन की प्रगति पर अपना दुष्प्रभाव डालती है।

सन्दर्भ

1. Mangal SK. Statistics in psychology and Education prentice, Hall of India private limited, 2008.
2. Sharma RA. Fundamentals of Educational Psychology. R. Lal Book Depot. (Merut), 2008.
3. Aggarwal YP. "Statistical method concept, application and computations"; sterling publishers pvt. ltd New Delhi, 2000.
4. Sharma RA. Educational Research and Statistics, 2005.
5. Mangal SK. Methodology of Educational Research, (2).
6. गुप्ता, डा. एस. पी., आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998
7. त्रिपाठी, लालबचन, मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान पद्धति, हरप्रसाद भार्गव, 4/230, कचहरी घाट, 1988
8. सिंह, अरुण कुमार, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 2004
9. पाण्डेय, डा. के. पी. ;2006 शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
10. कपिल, डा. एच. के., सांख्यिकी के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
11. गिलपफोर्ड, जे.पी., फन्डामेन्टल स्टैटिस्टिक्स इन साइकालॉजी एण्ड एजुकेशन, मैक्ग्राहिल बुक कम्पनी, 1982
12. कोहेन, लूविस तथा मैनियन, लारेंस, रिसर्च मेथड्स इन एजुकेशन, क्रूम हेल्म, लंदन,1980